

00019

POST GRADUATE CERTIFICATE IN
BANGLA-HINDI TRANSLATION
PROGRAMME (PGCBHT)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2015

एम.टी.टी.-002 : बांग्ला-हिन्दी अनुवाद : तुलना और
पुनःसृजन

समय : 3 घण्टे

अधिकतम अंक : 100

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 300 शब्दों में दीजिए : 10x2=20
- (a) हिन्दी और बांग्ला की भाषिक भिन्नता का सोदाहरण परिचय दीजिए।
- (b) बांग्ला और हिन्दी में मुहावरों की प्रकृति पर तुलनात्मक दृष्टि से विचार कीजिए।
- (c) बांग्ला की 'साधु' एवं 'चलित' भाषा की रूप-सम्बन्धी विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
- (d) बांग्ला के उच्चारणगत वैशिष्ट्य को सोदाहरण समझाइए।

2. निम्नलिखित बांग्ला शब्दों/पदों का हिन्दी पर्याय लिखिए : 5

अरन्य, बहुर, प्रभयक, प्रथा, लोकप्रिय, अवस्था, आशुन,
बलाका, दादा, रूटि।

3. निम्नलिखित हिन्दी शब्दों का बांग्ला पर्याय लिखिए : 5

गरम, जल्दी-जल्दी, अगरबत्ती, बहन, बालू, मौसी, मुंह, थोड़ा,
पहले, बचपन।

4. निम्नलिखित बांग्ला मुहावरों-लोकोक्तियों में से किन्हीं पाँच के हिन्दी समतुल्य बताते हुए उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए : 15

- (a) अति भक्ति चोरের লক্ষণ
- (b) উল্টে চোর গেরস্থকে বাঁধে
- (c) গেয়ৌ যোগী ভিখ পায় না
- (d) ছুঁচো মেরে হাত গন্ধ করা
- (e) চোরের মন বাঁচকার দিকে
- (f) জলে বাস করে কুমীরের সঙ্গে বিবাদ
- (g) 'ক' অক্ষর গো-মাংস
- (h) কাটা ঘায়ে নুনের ছিটে

5. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन अनुच्छेदों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए :

3x15=45

(a) অনেক দুঃখের পর মহেন্দ্র আর কল্যাণীতে সাক্ষাৎ হইল। কল্যাণী কাঁদিয়া লুটিয়া পড়িল। মহেন্দ্র আরও কাঁদিল। কাঁদাকাটার পর চোখ মুছার খুম পড়িয়া গেল। যত বার চোখ মুছা যায়, তত বার আবার জল পড়ে। জলপড়া বন্ধ করিবার জন্য কল্যাণী খাবার কথা পাড়িল। ব্রহ্মচারীর অনুচর যে খাবার রাখিয়া গিয়াছে, কল্যাণী মহেন্দ্রকে তাহা খাইতে বলিল। দুর্ভিক্ষের দিন অন্ন ব্যঞ্জন পাইবার কোন সম্ভাবনা নাই, কিন্তু দেশে যাহা আছে, সম্ভানের কাছে তাহা সুলভ। সেই কানন সাধারণ মনুষ্যের অগম্য। যেখানে যে গাছে, যে ফল হয়, উপবাসী মনুষ্যগণ তাহা পাড়িয়া খায়। কিন্তু এই অগম্য অরণ্যের গাছের ফল আর কেহ পায় না। এই জন্য ব্রহ্মচারী অনুচর বহুতর বন্য ফল ও কিছু দুগ্ধ আনিয়া রাখিয়া যাইতে পারিয়াছিল। সন্ন্যাসী ঠাকুরদের সম্পত্তির মধ্যে কতকগুলি গাই ছিল। কল্যাণীর অনুরোধে মহেন্দ্র প্রথমে কিছু ভোজন করিলেন। তাহার পর ভুক্তাবশেষ কল্যাণী বিরলে বসিয়া কিছু খাইল। দুগ্ধ কন্যাকে কিছু খাওয়াইল, কিছু সঞ্চিৎ করিয়া রাখিল, আবার খাওয়াইবে। তার পর নিদ্রায় উভয়ে পীড়িত হইলে, উভয়ে শ্রম দূর করিলেন। পরে নিদ্রাভঙ্গের পর উভয়ে আলোচনা করিতে লাগিলেন, এখন কোথায় যাই। কল্যাণী বলিল, “বাড়ীতে বিপদ বিবেচনা করিয়া গৃহত্যাগ করিয়া আসিয়াছিলাম, এখন দেখিতেছি, বাড়ীর অপেক্ষা বাহিরে বিপদ অধিক। তবে চল, বাড়ীতেই

ফিরিয়া যাই।” মহেন্দ্রেরও তাহা অভিপ্রেত। মহেন্দ্রের ইচ্ছা, কল্যাণীকে গৃহে রাখিয়া, কোন প্রকারে এক জন অভিভাবক নিযুক্ত করিয়া দিয়া, এই পরম রমণীয় অপার্থিক পবিত্রতায়ুক্ত মাতৃসেবারত গ্রহণ করেন। অতএব তিনি সহজেই সম্মত হইলেন। তখন দুই জন গতক্রম হইয়া, কন্যা কোলে তুলিয়া পদচিহ্নাভিমুখে যাত্রা করিলেন।

- (b) সেখানে অবশ্য মন টেকেনি লক্ষণের। ততদিনে বেশ পরিচিতি পাওয়ার ফলে পোর্টফোলিও নিয়ে সরাসরি গিয়ে দেখা করেন টাইমস অফ ইন্ডিয়া কাগজের আর্ট ডিরেক্টর ওয়াল্টার ল্যাথ্যামারের সঙ্গে এবং চাকরিও পাকা হয়ে যায়। ধীরে-ধীরে কট্টর রাজনৈতিক কার্টুনিষ্ট হিসেবে নিজের জায়গাটা পাকা করে ফেলেন এই কন্নড় যুবক।

একটানা পঞ্চাশ বছর ধরে বিভিন্ন কাগজে রাজনৈতিক কার্টুন ঐঁকেছেন লক্ষণ। জওহরলাল নেহরু থেকে ইন্দিরা গান্ধী, মোরারজি দেসাই কিংবা অটলবিহারী বাজপেয়ীর জমানায় ভারতবর্ষ একের পর এক যে ধরনের বিশৃঙ্খলার মধ্যে দিয়ে গিয়েছে, তার এক ধারাবাহিক দলিল হয়ে আছে তাঁর সব আঁকা। লক্ষণ মনে করতেন কার্টুনিস্টের সঠিক ভূমিকা হল একজন কড়া সমালোচকের। শাসকগোষ্ঠী থেকে সাধারণ একজন দেশবাসী, কোথায় কীভাবে দুর্নীতি বা দ্বিচারিতার সঙ্গে জড়িয়ে পড়ছে সেদিকে নজর রেখে তুলির আঁচড়ে মুখোশ খুলে দিতেন তিনি। দৈনন্দিন রাজনৈতিক ঘটনা নিয়ে তিন-চার কলাম

জোড়া এডিটোরিয়াল কার্টুন ছাড়াও এক কলামের পকেট কার্টুন চালু করেন তিনি, 1957 সালে। নাম দিয়েছিলেন 'you said it'। কর্মজীবনের প্রায় শেষ দিন অবধি তিনি চালু রেখেছিলেন এই কলামটি এবং এটিই লক্ষণকে এনে দেয় বিপুল জনপ্রিয়তা। ওঁর ব্যঙ্গাত্মক মেজাজটাকে সবচেয়ে ভাল চেনা যায় এখানেই। যেমন, পেট্রলের উর্ধ্বমুখী দাম নিয়ে একটা কার্টুনে ছিল, সুট-টাই পরা এক ভদ্রলোক হাতের পিঠে চড়ে অফিসে চলেছেন আর পাশের গাড়িওয়ালাদের বলছেন, “আমার এখন এটাতেই সস্তা পড়ে”।

- (c) আর সময়ের হিসেব নেই। সন-তারিখ সব গুলিয়ে গেছে। রসদ আর কয়েক দিনের মতো আছে। শরীর মন অবসন্ন। প্রহ্লাদ আর নিউটন নিজীবের মতো পড়ে আছে। কেবল বিধুশেখরের কোনও গ্লানি নেই। ও বিড়বিড় করে সেই কবে প্রহ্লাদের মুখে শোনা ঘটোৎকচবধের অংশটা আবৃত্তি করে যাচ্ছে।

আজও সেই ক্লিমধরা ভাবটা নিয়ে বসেছিলাম এমন সময় বিধুশেখর হঠাৎ তার আবৃত্তি থামিয়ে বলে উঠল, ‘বাহবা, বাহবা, বাহবা’।

আমি বললাম, ‘কী হল বিধুশেখর, এত ফুর্তি কীসের?’

বিধুশেখর বলল, ‘গবাক্ষ উদঘাটন করহ’।

এর আগে বিধুশেখরের কথা না শুনে ঠকেছি।
তাই হাত বাড়িয়ে জানলাটা খুলে দিলাম। খুলতেই
চোখঝলসানো দৃশ্য আমার কিছুক্ষণের জন্য অন্ধ
করে দিল। যখন দৃষ্টি ফিরে পেলাম, দেখি আমরা
এক অদ্ভূত অবিশ্বাস্য জগতের মধ্যে দিয়ে উড়ে
চলেছি। যত দূর চোখ যায় আকাশময় কেবল
বুদবুদ ফুটছে আর ফাটছে, ফুটছে আর ফাটছে।
এই নেই এই আছে, এই আছে এই নেই।

অগুনতি সোনার বল আপনা থেকেই বড় হতে হতে
হঠাৎ ফেটে গিয়ে সোনার ফোয়ারা হয়ে ছড়িয়ে
মিলিয়ে যাচ্ছে।

আমি যে অবাক হব তাতে আর আশ্চর্য কী।
কিন্তু প্রহ্লাদ যে প্রহ্লাদ, সেও এই দৃশ্য দেখে মুগ্ধ না
হয়ে পারেনি। আর নিউটন? সে ক্রমাগত বাঁপিয়ে
বাঁপিয়ে পড়ে জানালার কাচটা খামচাচ্ছে পারলে
যেন কাচ ভেদ করে বাইরে চলে যায়।

- (d) সুভাষ শান্ত মানুষ। অবসর গ্রহণের পর যেন আরও
চুপচাপ। শুধু নাতি নাতনি এলে একটু প্রাণের
স্পন্দন পায়। ছেলে-বউমা যা খেতে ভালোবাসে
তড়িঘড়ি দুনিয়া ঘুরে তা নিয়ে এসে অনুপমাকে
বলে বানানোর জন্য। ভোর থেকে লাইন দিয়ে
কচি খাসির রান, মানিকতলার বাজার থেকে গলদা
চিংড়ি আরও কত কী! ওরা টিকিট কেটে কলকাতায়
আসার কথা জানলেই বুড়োবুড়ির সংসারে সাজো
সাজো রব পড়ে যায়। এসির মিস্ট্রিকে খবর দিয়ে

সার্ভিস করিয়ে নেয় এসি। পাড়ার একটা ছেলেকে ডেকে পাখা - বাতিগুলোকে ঝাড়িয়ে পুঁছিয়ে নেয়। অনুপমা রান্নার মেয়েটাকে দিয়ে তাকগুলো ঝকঝক করিয়ে নেয়। নতুন চায়ের কাপ ডিশ বের করে রাখে। ওরা আসারদিন ডাইনিং টেবিলে নতুন টেবিল ক্লথ, জলের জাগ এখনই বদলে রাখে।

ওদের আসার কথা শুনলেই মনটা যেন অজানা এক আনন্দে চিকচিকিএ ওঠে। ঠিক অপ্ৰত্যাশিত বৃষ্টির ফোঁটায় শীতকালের গাছের পাতাগুলো যেমন প্রান ফিরে পায়। তখন আর বইএর উপন্যাসগুলো বোরিং লাগে পড়তে। টিভির খবরেও মন লাগে না। পাঠচক্রের বন্ধুরা ঠাট্টা করে বলে 'কী, ছেলে আসছে বলে মাজা দিয়েছ মনে হচ্ছে!'

মোবাইলের পয়সা পুড়তে থাকে সকালসাঁঝে। অনুপমার দিদি, বৌদি সকলকে ফোন করা হয়। আগ বাড়িয়ে সুভাষও শালি-শালাদের সঙ্গে ঠাট্টা ইয়ারকি করতে শুরু করে দেন। শুধু ওরা আসবে বলেই হয়তো কিছুটা ভালোলাগা আর ওদের জন্য দিন গোনা। অনুপমার পুরনো হবিগুলোয় যেন একটু করে রং তুলির ছোঁয়া লাগে। ড্রইংরুমের সংলগ্ন বারান্দা থেকে ড্রেসিনা-ক্রোটনগুলো একটু বেশি সবুজ হয়ে ওঠে। পেতলের টিব উজ্জ্বল হয়ে ওঠে বহুদিন পরের মাজাঘষায়। একেই বুঝি বলে সন্তানস্নেহ! এই বয়সে জীবনের আনাচকানাচ ভরিয়ে তুলতে পারে একমাত্র এরাই।

- (e) ব্যোমকেশ ও আমি গত ফাল্গুন মাসে বীরেনবাবুর কন্যার বিবাহ উপলক্ষে দু’দিনের জন্য কলিকাতার বাহিরে গিয়াছিলাম। শহরটি প্রাচীন এবং নোংরা। কলিকাতা হইতে মাত্র তিন ঘণ্টার পথ। ট্রেন বদল করিতে না হইলে আরও কম সময়ে যাওয়া যাইত।

বীরেনবাবুর সহিত আমাদের দীর্ঘকালের ঘনিষ্ঠতা। তিনি কলিকাতায় পুলিশ কর্মচারী ছিলেন। বহু বার বহু সূত্রে তাঁহার সংস্পর্শে আসিয়াছি। অতিশয় সজ্জন ব্যক্তি। বছর দুই আগে অবসর লইয়া এই শহরে বাস্তুভিটায় বাস করিতেছেন। কন্যার বিবাহে আমাদের সর্নিবন্ধ নিমন্ত্রন জানাইয়াছিলেন। ব্যোমকেশেরও হাতে কাজ ছিল না। তাই বিবাহের দিন পূর্বাঙ্কে আমরা বীরেনবাবুর গৃহে অবতীর্ণ হইলাম।

বিষে বাড়িতে যথাবিহিত কর্মতৎপরতা ও হৈ হৈ চলিতেছে, সানাই বাজিতেছে। বীরেনবাবু ছুটিয়া আসিয়া আমাদের সম্বর্ধনা করিলেন এবং একটি ঘরে লইয়া গিয়া বসাইলেন। ঘরের মেঝেতে ফরাস পাতা, বরযাত্রীদের জন্য যথারীতি সাজানো। কিন্তু বর ও বরযাত্রীরা স্থানীয় বাসিন্দা, তাহারা সন্ধ্যার পর আসিবে। উপস্থিত ঘরটি খালি রহিয়াছে।

আমরা তাকিয়া ঠেস দিয়া বসিলাম। চা জলখাবার আসিল। বীরেনবাবু আমাদের সঙ্গে আলাপ করিতে করিতে একটু উস্খুস্ করিতে লাগিলেন। তাহা দেখিয়া ব্যোমকেশ বলিল, ‘আপনি কন্যাকর্তা, আজকের দিনে আপনি বসে আড্ডা মারলে চলবে কি করে? যান, কাজকর্ম করুন গিয়ে।’

बीरेनबाबु एकट्टी अप्रतिभभावे एदिक ओदिक
चाहितेछेन एमन समय घरेर बाहिरे कन्ठस्वर शोना
गेल 'कई हे बीरेन मेयेर वियेर कि व्यवस्था
करले देखेते एलाम।'

6. निम्नलिखित में से किसी एक अनुच्छेद का बांग्ला में अनुवाद 10
कीजिए :

(a) एक किसान था। सीधा-सादा और मेहनती। उसकी
पत्नी मर चुकी थी। बस, दो बच्चे थे-एक लड़का और
एक लड़की। दोनों छोटे थे। वक्त की बात है, किसान
बीमार हो गया। उसने दोनों को बुलाकर कहा, "मेरे
बच्चों, मेरा ऊपर जाने का समय आ गया है। लो ये चाँदी
के चार सिक्के। पूरे जीवन में मैं यही जोड़ सका हूँ तुम
लोगों के लिए। इन्हें तभी काम में लाना, जब बहुत जरूरी
हो।"

कुछ दिन बाद किसान मर गया। भाई - बहन
अनाथ हो गए। वे दोनों अपने पिता जैसे ही सीधे - सादे
थे। अपने छोटे-से खेत में परिश्रम करके जो थोड़ा-बहुत
चावल व साग - सब्जी पैदा कर पाते, उसी में गुजारा कर
लेते।

एक बार भयंकर अकाल पड़ा। कुएँ, तालाब,
झरने -- सब सूख गए। खेतों में चावल और
साग - सब्जी पैदा होने का सवाल ही नहीं था। भूखों
मरने की नौबत आ गई, तो गाँव वाले चावल खरीदने
शहर चल पड़े। लड़की ने अपने भाई से कहा, "तुम भी
शहर जाकर चावल खरीद लाओ।"

“हमारे पास पैसे कहाँ हैं?”

“पैसे नहीं हैं तो क्या, चाँदी के चार सिक्के तो हैं। इन्हें बेचकर चावल खरीद लाओ!”

“चाँदी के इन चार सिक्कों से भला कितने चावल आएँगे?”

बहन का जवाब था, “इतने तो आ ही जाएँगे कि हम चार दिन पेट भरकर खा सकें।”

“क्या फायदा? चार दिन बाद भी तो भूखों ही मरना पड़ेगा।”

“मेरे भाई, निराश क्यों होते हो। जितने दिन हम जिन्दा रह सकें, उतने दिन तो जिन्दा रहने की कोशिश करनी चाहिए। चार दिन बाद क्या होता है, क्या पता।”

- (b) फिल्मों की दुनिया विचित्र है। वहाँ कितनी तरह की अफ़वाहें उड़ती हैं जिनका सिर न पैर; पर जो जितनी अविश्वसनीय होती हैं, उनका उतना ही विश्वास किया जाता है। उन्हें बड़े शौक से सुना जाता है और उससे भी ज्यादा शौक से उन्हें दूसरों से कहा जाता है। मुँह से कान और कान से फिर मुँह तक पहुँचती, अपना रूप बदलती, क्या से क्या होकर वे कहाँ से कहाँ पहुँचती हैं, आप कोई अंदाजा नहीं लगा सकते। और फिर सिने - पत्र - पत्रिकाओं का संसार उन्हें ले उड़ता है। उन्हें सनसनीखेज अफ़वाहों को छापने से मतलब, सच्चाई चाहे उनमें राई बराबर न हो। राई हो तो उसे पहाड़ कर देना उनके लिए बाँए हाथ का खेल है। कोई पूछने वाला नहीं कि जो

खबर आप छाप रहे हैं उसका स्रोत क्या है? बस लिख दिया-‘ऐसा कहा जाता है’, या ‘ऐसा सुनने में आया है।’ और फिर एक बार अखबार से दूसरे अखबार और एक पत्रिका से दूसरी पत्रिका में वही बात कुछ अदल - बदल, नमक - मिर्च लगा, कुछ गरम मसाला मिलाकर प्रकाशित होती रहती हैं। लगता है ऐसी पत्रिकाओं के पाठक इस प्रकार की बातें पढ़ने में रस लेते होंगे, तभी तो उनकी कमजोरी का लाभ उठाकर उनके प्रकाशक अपने पत्रों की बिक्री बढ़ाते, अपने मनचले-भोले पाठकों के पैसों का शोषण करते और उनकी रुचि विकृत से विकृततर करते रहते हैं।
